

सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा और दलित साहित्य

नीरजा सिंह

दलित शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत धातु 'दल' से हुई है। जिसका अर्थ है दलन, दमन, विकसना, फटना, खंडित, होना, मर्दित होना, विनष्ट किया हुआ, मसला हुआ आदि।

दलित वर्ग के जनक डॉ. भीमराव आंबेडकर ने दलित वर्ग को एक महामंत्र दिया- "शिक्षित बनो, संगठित हो तथा संघर्ष करो।" इससे दलित वर्ग में नयी चेतना आयी। धीरे-धीरे इस चेतना ने एक आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिया।

आंदोलन ने समाज में सामाजिक एकता, समानता, एकता, बंधुत्व के लिये पारस्परिक मान्यताओं को नकारा। वर्ग व्यवस्था को नकारा और अंत में इस वर्ग की सभ्यता और संस्कृति साहित्य का रूप बन गयी और वर्तमान में दलित साहित्य के रूप में स्थापित विधा के अंतर्गत दलित कविता संत रैदास और कबीर से होती हुई 'हीरा डोम और अछूतानंद' तक आयी। उसके बाद रैदास और आंबेडकर की विचार धारा में निरंतर प्रवाहित होकर १९ वीं शताब्दी तक आयी। १९ वीं शताब्दी में भी दलित कविता लोकगीतों के रूप में आगे बढ़ती परन्तु साठ के दशक में हिंदी के दलित कवियों ने मराठी दलित साहित्य से प्रेरणा लेकर हिंदी में दलित साहित्य का सृजन किया जो वर्तमान में परिलक्षित हो रहा है।

हिंदी साहित्य की भांति दलित साहित्य का प्रारम्भ भी काव्य से माना जाता है। दलित कविता के विकास में डॉ. एन. सिंह ने भी अपना योगदान दिया। डॉ. एन. सिंह एक विद्रोही कवि हैं। व्यवस्था पर चोट इनकी कविताओं का केंद्रीय भाव है तथा सामाजिक परिवर्तन लक्ष्य है। सीधी सपाट भाषा में सामाजिक विसंगतियों पर इनकी रचनाएँ चोट करती हैं -

" मेरे श्रमकण मिट्टी में मिलकर

दुसरो की झोली को मोतियों से भर देते हैं

मेरी झोली में होती हैं भूख , बेबसी और लाचारी।"1

हिंदी साहित्य की प्रथम कहानी १९९० में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई । इसके बाद कहानी अपने विकास के मार्ग पर आगे बढ़ती गयी । कहानी के प्रारंभिक दौर में दलितों का विद्रोह चरम सीमा पर पहुंच चुका था । देश में स्वतंत्रता संग्राम के समय दो महान विभूतियों का आगमन हुआ । एक महात्मा गाँधी जो अंग्रेजों से देश की आजादी चाहते थे। दूसरे भीमराव अंबेडकर भारत की आजादी के साथ हिन्दू धरम से दलितों की मुक्ति चाहते थे । ये देख महात्मा गाँधी ने 'अछूतोद्धार ' कार्यक्रम चलाकर निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति जताई । ये सहानुभूति कहानी के प्रारंभिक दौर के सवर्ण हिंदी कथाकारों में देखने को मिलती हैं । निराली की 'चतुरी चमार' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' में शोषित वर्ग स्त्री और मजदूरों के प्रति सहानुभूति देखने को मिलती हैं । वही यशपाल की कहानी 'पर्दा' में भूख , गरीबी व शोषण का दारुण चित्रण मिलता है। परन्तु वास्तविक स्वानुभूति तो प्रेमचंद की कहानियों में नरक भोगते निम्न वर्ग के वर्णन में मिलती हैं । इससे जागृत हो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् दलित साहित्यकारों ने अपनी कलम को रूप दिया था ।

हिंदी कथा साहित्य में आठवां दशक दलित साहित्य के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं । इस समय की कहानियों में शूद्र समाज की समस्याओं को कहानी का केंद्र बनाया गया । स्वतंत्रता के बाद भी दलितों का जीवन बद से बदतर होता चला गया । कालांतर में साहित्यकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से निम्न वर्ग के यथार्थ जीवन का चित्रण किया हैं । इन कहानियों में दलितों की वेदना, संघर्ष व शोषण के प्रति विद्रोह , मानवीय अधिकारों को लेकर जाग्रति आयी हैं । इससे दलित साहित्य में हो रहे परिवर्तन की झलकी स्पष्ट दिखाई दे रही हैं । दलित कहानी का भविष्य उज्ज्वल हैं , कहानी के विस्तार की बहुत सम्भावनाएँ हैं । दलित कहानियां सत्य और साहस पर आधारित हैं ।

दलित साहित्य में उपन्यास विधा भी सशक्त रूप में उभर रही हैं । साहित्य में अनेक दलित उपन्यास रचे गए किन्तु सामाजिक दृष्टि से देखने पर डॉ. जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' पहला दलित उपन्यास हैं । इसकी मूलकथा दलित समस्या पर आधारित हैं । इस

सम्बन्ध में दलित साहित्य के प्रख्यात आलोचक डॉ.एन.सिंह ने लिखा है की "जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' एक परिवर्तनकारी उपन्यास है, जिसे मैं हिंदी का पहला दलित उपन्यास मानता हूँ"²

साहित्य में नाट्य विधा का अभाव प्राचीनकाल से ही रहा है। १४ वी शती से लेकर १९ वी शती के मध्य तक नाटकों के नाम पर मैथिल कवि विद्यापति कृत 'रुक्मिणी-हरण', देव कृत 'देवमाया प्रपंच', हरी राम कृत 'जानकी रामचरित्र' अदि नाटक लिखे गए हैं। हिंदी साहित्य में कुछ लोगो ने हिंदी का प्रथम नाटक गोपालचंद के 'नहुष' नाटक को माना है। वही दलित साहित्य में नाटक स्वतंत्रता के बाद लिखे जाने लगे। सर्वप्रथम दलित नाटक श्री शिवप्रस्न्न दास का 'हरिजन' १९५९ में प्रकाशित हुआ। दलित साहित्य में नाटकों को एकांकी अभिनय का नाम दिया गया है। सबसे ज्यादा दलित नाटक श्री माता प्रसाद जी के हैं। इन नाटकों में दलित समाज की किसी न किसी समस्या को केंद्र में रखा गया है तथा समस्याओं के समाधान भी निकाले गए हैं। जैसे श्री माताप्रसाद का नाटक 'अंतहीन बेड़ियाँ' का दृश्य :

द्रोणाचार्य - 'एकलव्य ! तुम्हारा बहस करना व्यर्थ है। तुमने वायदा किया है , अगर गुरु दक्षिणा देना चाहते हो तो अपना वायदा पूरा करो।'

एकलव्य - 'मैं अपनी बात से मुकरने नहीं जा रहा हूँ। भील लोग अपनी बात से हट नहीं सकते। अगर आपको मेरा अंगूठा ही लेना है तो लीजिये।'

दलित आत्मकथा का आरम्भ मराठी दलित साहित्य से माना गया है। दलित साहित्य में आत्मकथा लिखने के प्रेरणास्रोत डॉ. अंबेडकर हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'अमी कासा झालो' लिखकर दलित लेखकों को आत्मकथाएँ लिखने के लिए प्रेरित किया।

दलित साहित्य में आलोचना विधा में भी काम हो रहा है। यह विधा अभी अपनी शैशवावस्था में है। हिंदी साहित्य में दलित आलोचना की प्रथम पुस्तक डॉ. एन. सिंह द्वारा सम्पादित 'दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम' है। पुस्तक में बारह लेख संकलित हैं।

दलित साहित्य में लगभग सभी निबंध सामाजिक मुद्दों पर प्रकाशित हुए। निबंधकारों ने दलित समाज को केंद्र में रख कर कार्य किया है। दलित साहित्य में सर्वप्रथम ललित निबंध डॉ. पुरुषोत्तम 'सत्यप्रेमी' का 'पत्ते क्यों गिरते हैं' १९८९ में प्रकाशित हुआ।

वर्तमान में दलित साहित्य की हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने अहम् भूमिका हैं व दलित साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं | इस पर अकबर इलाहबादी ने कहा हैं-

"खींचो न कमान न तलवार निकालो |

गर तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो |"⁴

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं की वर्तमान में दलित समाज में परिवर्तन आया हैं| उसमे बाबा साहेब अंबेडकर का आंदोलन, प्रेरणा, मार्क्स की क्रांति , महात्मा ज्योतिबा फुले, रैदास का वर्ण व्यवस्था के प्रति विरोध तथा महात्मा बुद्ध की सामाजिक समानता अदि से प्रेरित होकर दलितों में नयी चेतना की लहर आयी | यह चेतना आज समाज में पूर्ण रूप से विकसित हो रही हैं | दलित समाज ने मानवीय अधिकार प्राप्त किये हैं | सामाजिक समानता, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर पर गावों व शहरो में परिवर्तन हुआ हैं | दलित साहित्य हर विधा में पुष्पित, पल्लवित होकर नए आयाम प्रस्तुत कर रहा हैं और यह क्रम अभी जारी हैं |

सन्दर्भ सूची :

१. शब्द-शब्द संघर्ष , डॉ. एन.सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ/ पृष्ठ सं. १६५
२. दलित साहित्य परंपरा और विन्यास , डॉ. एन.सिंह, पृष्ठ सं. ३६
३. वही पृष्ठ सं. १७४
४. दलित साहित्य में प्रमुख विधाएँ, संकलन-माता प्रसाद, पृष्ठ सं.३४

नीरजा सिंह

हिंदी विभाग , राजस्थान विश्वविद्यालय,

जयपुर, राजस्थान |

पता :- ८३, बाल विहार कॉलोनी , जोशी मार्ग के पास,

कालवाड़ रोड , झोटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान

पिनकोड- ३०२०१२

